Quadrant II - Notes

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HND 104

Paper Title: प्रयोजनमूलक हिंदी

Unit: 01

Module Name: हिंदी वर्ण और शब्दों का मानक रूप

Module No: 04

Name of the Presenter: Ms. Vishakha Harmalkar

Transcript

नमस्कार। आप सभी का स्वागत है। HND 104 'प्रयोजनमूलक हिंदी' के अंतर्गत आज हम 'हिंदी वर्ण और शब्दों का मानक रूप' इस विषय पर आज हम चर्चा करेंगे।
सबसे पहले हम रूपरेखा को देख लेते है - हिंदी वर्णमाला, वर्ण, व्यंजन और शब्दों का मानक रूप।
अधिगम परिणाम - तो छात्र मानक हिंदी वर्णमाला से परिचित होंगे। साथ ही साथ छात्र शब्दों के जो मानक रूप है, तो मानक रूपों से अवगत होंगे।

अब हम मुख्य विषय की ओर बढ़ते है -

मानक हिंदी वर्णमाला
वर्ण, भाषा की ध्वनियों के उच्चरित तथा लिखित दोनों रूपों के प्रतीक। कहने का तात्पर्य यही है कि जब भी हम ध्वनियों को लिखते है या उसका उच्चारण करते है, तब इन्हीं वर्णों का हम इस्तेमाल करते है। तो वर्णों का जो क्रमबद्ध समूह होता है उसे ही 'वर्णमाला' कहा जाता हैं। तो ऐसेमें यह सबसे ज्यादा आवश्यक है कि जो भी हमारी वर्णमाला है यानी जो भी वर्ण है, उनमें एकरूपता हो। यानी, लिखने का तरीका एक जैसा होना बेहद ही ज्यादा जरूरी होता है। तो इसीके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय की अधीनस्थ जो संस्था है 'केंद्रीय

हिंदी निदेशालय’। तो ‘केंद्रीय हिंदी निदेशालय’ द्वारा मानक स्वरूप का निर्धारण किया गया। यानी, वर्णों का एक मानक रूप तैयार किया गया। तो अभी हम हिंदी वर्णों की ओर बढ़ते है।

सबसे पहले आता है ‘स्वर’। तो स्वरों का जब उच्चारण किया जाता है तब जो है हमें उच्चारण पर बहुत ज्यादा वहाँ पर हमें ध्यान देना जरूरी है। जैसे कि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, फिर आता है ऐ, ओ और औ।
जब हम इसका उच्चारण करते है तब हम देखेंगे, जो ‘अ’ है उसपर बहुत ही कम ज़ोर दिया जाता है, उसीके साथ ‘इ’। और वही अगर हम बड़ी ‘ई’ कहेंगे तो वहाँ पर ‘ई’, तो वहाँ पर ज्यादा ज़ोर दिया जाता है। जिसे ह्रस्व और दीर्घ कहा जाता है। ह्रस्व यानी छोटी ‘इ’, दीर्घ यानी बड़ी ‘ई’।

व्यंजन

तो जो ‘क’ वर्ग है उसका उच्चारण जो है कंठ से किया जाता है। जैसे कि क, ख, ग, घ और ङ। तो जो ‘ङ’ आता है, तो यहाँ पर हम क्या करें? इसका उच्चारण जो है वह नाक से किया जाता है यानी नाक की सहायता से।
तो अगला है ‘च’ वर्ग। ‘च’ वर्ग का जो उच्चारण है वह हमारे तालु से किया जाता है। जैसे कि च, छ, ज, झ और ञ। पंचम वर्ण क्या आ रहा है यहाँ पर? ‘ञ’।
अगला है ‘ट’ वर्ग जिसका उच्चारण मूर्धा से किया जाता है। जैसे कि ट, फिर ठ, ड, ढ और ण। आप यहाँ पर देखेंगे कि जो **‘ड’** और **‘ढ’** है, उसका प्रयोग हिंदी में और दूसरे एक तरीके से किया जाता है। जहाँ पर हम देखेंगे कि वहाँ पर नुक़्ता यानी बिंदु लगाया गया है। तो इसका उच्चारण जो है **‘ड’** और **‘ढ’** से अलग है। तो इसे हम कहेंगे **‘ड़’** और **‘ढ़’**। जैसे कि जब हम **‘ड’** और **‘ढ’** कह रहे है, तो यहाँ पर हम ज्यादा ज़ोर दे रहे है। वही जब इसी **‘ड’** और **‘ढ’** के नीचे बिंदु का इस्तेमाल किया जाता है तो वहाँ पर आप देख आप गौर फर्मा सकते हो कि वहाँ पर हम ज्यादा ज़ोर नहीं दे रहे है। जैसे कि ‘ड़’, ‘ढ़’। तो बहुत ही जल्द इसका उच्चारण किया जाता है।
अगला है ‘त’ वर्ग, जिसका उच्चारण दंत्य यानी कि दांतों के सहारे किया जाता है। जैसे कि त, फिर थ, द, ध और न।
आगे हम बढ़ेंगे ‘प’ वर्ग, जिसका उच्चारण ओष्ठ यानी होठों के सहारे किया जाता है। प, फ, ब, भ और म। यह जो ‘फ’ है उसे ‘फ़’ नहीं कहेंगे। उसे हम क्या कहते है? ‘फ’। फूल, फ़ूल नहीं **‘फूल’**। तो ऐसेमें प, फ, ब, भ और म।

अगला है य, र, ल, व।

फिर आता है श, ष, स और ह।

तो इस प्रकार हम देख सकते है कि जो **'ड़'** और **'ढ़'** यह जो व्यंजन रूप है, यह हिंदी में स्वीकार की गई ध्वनियाँ हैं। तो इस प्रकार हमारी हिंदी वर्णमाला में कुल 11 स्वर आते हैं और 35 व्यंजन। अब 35 कैसे हुए? हमारे 33 व्यंजन और जिसमें और दो व्यंजन मिलाये गए है, वह है **'ड़'** और **'ढ़'**। तो इन्हें मिलाकर कुल व्यंजनों की जो संख्या है वह 35 हो जाती है।

तो अगला है -

संयुक्त व्यंजन

तो यहाँ पर हम देख सकते है संयुक्त व्यंजन। यानी जब दो व्यंजनों को मिलाकर एक व्यंजन तैयार किया जाता है। जैसे कि यहाँ पर आएगा 'क्ष' जो **'क्'** और **'ष'** को मिलाकर लिखा जाता है 'क्ष'।

फिर आता है 'त्र' जो **'त्'** और **'र'** को मिलाकर लिखा जाता है।

फिर यहाँ पर आता है 'ज्ञ' या फिर हम इसे कहेंगे 'ज्ञ'। अब यहाँ पर जरा जो है बहुत सारे मत आपको दिखाई देंगे। तो यहाँ आप स्क्रीन पर देखेंगे कि यहाँ पर दो वर्ण लिखे गए है। एक है **'ज्'** और दूसरा है **'ञ'**। तो जब **'ज्'** और **'ञ'** मिलेगा तो बनेगा शब्द **'ज्ञ'**। लेकिन हम ज़्यादातर हिंदी में इसका उच्चारण **'ज्ञ'** ही करते है। **'ज्ञ'** जो **'ग्'** और **'य'** से मिला हुआ है। जैसे कि जब हम कहते है ज्ञान, विज्ञान, अज्ञान तो हम वहाँ पर क्या कह रहे है? ज्ञ का हम उच्चारण कर रहे है। वहाँ पर हम ज्ञान, अज्ञान इसप्रकार का उच्चारण नहीं कर रहे है। लेकिन बहुत जगह आपको यह मिलेगा कि असल में जो 'ज्ञ' है उसका शुद्ध उच्चारण होता है 'ज्ञ' लेकिन हिंदी में 'ज्ञ' ही स्वीकृत किया गया है।

अगला है 'श्र' जो **'श्'** और **'र'** को मिलाकर बनता है 'श्र'।

तो अगला है अनुस्वार, जिसे शिरोबिंदु भी कहा जाता है। यानी जब हम **'संयम'** लिखते है तो वहाँ पर आप देख सकते हो 'स' के ऊपर एक बिंदु आया है। तो इस बिंदु को अनुस्वार कहा जाता है।

फिर आता है चंद्रबिंदु जो अनुनासिक होता है। जैसे कि जब हम **'आँख'** लिखेंगे तो 'आ' के ऊपर क्या आ रहा है? चंद्रबिंदु।

फिर आता है विसर्ग, जैसे कि 'प्रातः'। इसे क्या कहेंगे हम 'प्रातः'। तो यह जो दो बिंदु लगे है उसे विसर्ग कहेंगे और हल चिहन, जैसे कि 'भगवत्'। जब हम 'भगवत्' लिख रहे है तो यहाँ पर हल चिहन का हम इस्तेमाल कर रहे है।

अगला है आगत वर्ण। जैसे कि आगत वर्ण जो हमने दूसरी भाषाओं से लिए है। जैसे कि यह जो अवग्रह यह जो चिहन है, वह अँग्रेजी के 'S' की तरह लगता है। तो जैसे कि 'सोऽहं'। तो यहाँ पर 'अ' की जगह हम क्या कर रहे है? उस अवग्रह चिहन का हम इस्तेमाल कर रहे। यानी जब किसी कारण जब संधि के कारण 'अ' जब लुप्त, गायब हो जाता है, तब उसकी जगह पर अवग्रह का इस्तेमाल किया जाता है।

अगला है अर्धचंद्र। अर्धचंद्र - 'डॉक्टर'। तो अँग्रेजी से यह अपनाया गया है। तो अब आप 'डॉक्टर' कह लीजिए या जब आप 'कॉफी' लिखते है, जब आप 'कॉलेज' लिखते है तब अर्धचंद्र का इस्तेमाल किया जाता है।

अभी हमने कुछ शब्द ऐसे भी है जो हमने अरबी, उर्दू, फारसी से भी अपनाए है। जैसे कि अब हिंदी का आता है 'क'। लेकिन वही जब हम उसे उर्दू का जब हम कहेंगे तब इसे हम कहेंगे क़, क़। तो यहाँ पर हम क्या हो रहा है? 'क' और वही हम जब 'क़' कह रहे है तो वही यह अंदर से यह हम उसका उच्चारण करने की कोशिश करते है। जैसे कि क़लम, क़लम।

उसीके साथ 'ख़'। हम हिंदी में इसे 'ख' कहेंगे 'ख' और वही जब उर्दू में इसका उच्चारण होता है तो वह क्या हो रहा है? 'ख़'। तो हम यहाँ पर ज़ोर दे रहे है। जैसे कि मुख़ालफ़त। अभी यहाँ पर देखिए 'फ़' पर भी हम बात करेंगे लेकिन यह क्या हो गया? क़, फिर ख़।

अगला आता है हिंदी का 'ग'। अब वही जब उर्दू, फारसी, अरबी का हम कहेंगे 'ग़'। तो जैसे देखिए हिंदी का क, ख और ग। वही जब उर्दू, अरबी, फारसी का हम लेते है तब कैसे आयेगा? क़, ख़ और ग़।

अभी जैसे कि हिंदी में आता है 'ज'। लेकिन यह आएगा 'ज़'। जब 'ज' के नीचे नुक़्ता लगता है तो वह 'ज़' बन जाता है, कागज़।

उसी प्रकार हिंदी में यह होगा 'फ'। लेकिन यह यहाँ पर जब इसके नीचे नुक़्ता लगता है तो वह 'फ़' बन जाता है, 'तकलीफ़'। यह 'फ' नहीं 'फ़' बन जाता है।

अब यहाँ पर हमने कुछ शब्दों के मानक रूप लिए है। एक जगह मैंने अशुद्ध शब्दों को लिखा है और दूसरी जगह शुद्ध शब्दों को लिखा है। तो बहुत बार जब हम लिखते है तब बहुत सारी

गलतियाँ यहाँ पर हो जाती है। जैसे कि देखिए, 'अंतर्राष्ट्रीय'। बहुत सारे लोग जो है इसे इस तरह लिखते है लेकिन शुद्ध रूप क्या है? 'अंतरराष्ट्रीय'। उसी के साथ अंताक्षरी नहीं, अंत्याक्षरी' उसे कहा जाता है। शुद्ध रूप होता है अंत्याक्षरी'। उसीके साथ जो शब्द है 'अकसर'। बहुत बार हम क्या करते है 'क्' के साथ 'स' मिला देते है लेकिन उसे हम लिखते वक्त अ, क, स, र, 'अकसर'। उसीके साथ जब 'इनसान' लिखते है तब उसे इस प्रकार लिखा जाना चाहिए 'इनसान'। उसीके साथ आप अन्य उदाहरण भी स्क्रीन पर देख सकते है। जैसे कि केंद्रीय'। बहुत बार हम लिखते वक्त हम क्या करते है? एक तो हम 'के' के ऊपर बिंदु भी लगा देते है, फिर 'द' के साथ 'न्' भी जोड़ देते है। तो यह बहुत ही ज्यादा अशुद्ध रूप है। उसे इसप्रकार लिखा जाएगा। उसीके साथ 'जागृत', 'जाग्रत' लिखा जाता है। 'बिलकुल', 'बिलकुल' यह शब्द तो बहुत बार हम गलत लिखते है। इसे बि, ल, कु, ल 'बिलकुल'। उसी के साथ जब 'महत्त्व' लिखते है तब क्या होता है असल में? 'त्' के साथ 'त्व' जुड़ जुड़ जाता है। तो ऐसेमें 'महत्त्व' को इसप्रकार लिखा जाना चाहिए। यानी वहाँ पर दो बार 'त' यानी डब्बल 'त' आ जाता है।

तो इसप्रकार आज की इस कक्षा में हमने देखा कि स्वर कितने होते है? वर्ण कितने होते है? उनका उच्चारण किसप्रकार किया जाना चाहिए और साथ ही साथ अशुद्ध शब्दों को किसप्रकार हम लिखते है बहुत बार। लेकिन उसका शुद्ध रूप क्या होता है वह भी हमने इस वीडियो में जान लिया है।

संदर्भ सूची आप स्क्रीन पर देख सकते है।

धन्यवाद।